नवम्बर २०१३

क़ीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

प्रतिकूलता

हितकारी

संपादकीय

बालमित्रों,

क्या तुम जानते हो कि सोना खान में से निकलनेवाली धातु है? जब इसे खान से निकालते हैं तब इस धातु को देखना भी अच्छा नहीं लगता, इतनी काली होती है। तो फिर यह इतनी चमकीली और कीमती कैसे बन जाती है?

इसे मूल्यवान बनाने के लिए उसे भट्टी में डालते हैं। आग में अच्छी तरह तपने के बाद ही वह शुद्ध होता है। और फिर वह कीमती बन जाता है।

आग में सिकना किसे अच्छा लगता है? लेकिन यह प्रतिकूलता ही सोने को शुद्ध बनाकर कीमती बनाती है। नहीं तो खान में था, तब तक उसकी कोई कीमत ही नहीं थी।

यही सिद्धांत मनुष्यों पर भी लागू होता है। प्रतिकूलता मतलब मुश्किल संयोग। प्रतिकूलता व्यक्ति को गढ़कर उसकी प्रगति करवाता है। इसलिए प्रतिकूलता को तो हिम्मत के साथ स्वीकार करना चाहिए।

इस अंक में परम पूज्य दादाश्री ने प्रतिकूलता किस तरह उपकारी है, इसकी सुंदर समझ दी है।

तो आओ, इस अंक से सुंदर दृष्टि लें और जीवन में जब प्रतिकूलता आए, तब पॉज़िटिव रहें।

- डिम्पल महेता

प्रतिकूलता हितकारी

अनुक्रमणिका

३. दादाजी कहते हैं...
४. यह तो नई ही बात!
८. म्यूज़िक क्लास
११. महर्षि अरविंद घोष (अरविंदो) के बचपन की बात
१३. अपने आप को परखकर देखो!
१४. जीवंत उदाहरण
१६. चलो खेलें...
१८. मीठी यादें
१९. पाठकों के जवाब

संपादक :
डिम्पल महेता
वर्ष : १ अंक : ८
अखंड क्रमांक : ८
नवम्बर २०१३

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यु.एस.ए. :१५ डॉलर
यु.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यु.एस.ए. : ६० डोलर
यु.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

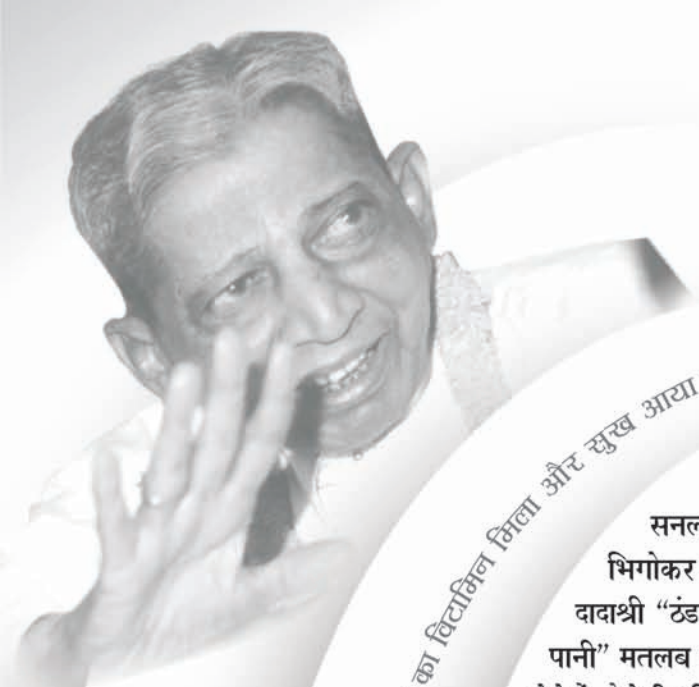

दादाजी कहते हैं...

दुःख आया मतलब यही समझना की मेरे आत्मा का विटामिन मिला और सुख आया तो देह का विटामिन मिला।

दादाश्री : खरा लाभ प्रतिकूलता में है। एक छोटी सी बात, ठंडे पानी में कपड़े भिगोकर सनलाइट (साबुन पावडर) डालो और गरम पानी में कपड़े भिगोकर सनलाइट डालो तो दोनों में फर्क है। (इस उदाहरण में दादाश्री "ठंडा पानी" मतलब अनुकूलता बताते हैं और "गरम पानी" मतलब प्रतिकूलता। जैसे गरम पानी में कपड़े ज्यादा साफ होते हैं, वैसे ही प्रतिकूलता हमारे लिए बहुत हितकारी है।)

यदि कपड़े में इतना अधिक फर्क पड़ता है तो फिर अपने में तो कितना फर्क पड़ जाएगा! दुःख आया मतलब यही समझना कि मेरे आत्मा का विटामिन मिला और सुख आया तो देह का विटामिन मिला। इस तरह चलना है। हम तो बचपन से ऐसा ही समझकर मज़े से चले।

जिसे तुम अड़चन कहते हो, वह "अच्छी चीज़ है" जब ऐसा मानोगे, तब तुम आगे बढ़ सकोगे। नहीं तो अगर अड़चन को तुम "खराब है" ऐसा कहोगे तो वह अड़चन तुम्हें अटका देगी और तुम्हारी प्रगति रुक जाएगी। अड़चनों को पार करोगे तभी काम बनेगा।

प्रश्नकर्ता : कोई परेशान करता हो तो क्या उसका उपकार मानें?

दादाश्री: उपकार ही मानना चाहिए। अगर इस संसार में हर एक चीज़ अपनी पसंद की आए तो मनुष्य कभी भी प्रगति नहीं कर सकता। प्रतिकूल व्यवहार नहीं आए तो अपनी आत्म शक्ति खिलेगी ही नहीं। इसलिए हमें उपकार मानना है कि "भाई, तेरा उपकार। तुमने मेरी शक्ति डेवलप कर दी।" लोग तो उल्टे के साथ उल्टा, सीधे के साथ सीधा करते हैं, उल्टा-सीधा करते ही रहते हैं। लेकिन हमें तो उल्टे के साथ भी सीधा रहना है और सीधे के साथ भी सीधा रहना है। सभी के साथ सीधा ही रहना है। क्योंकि हमें तो मोक्ष में जाना है न।

कड़वी दवाई रोग को मारती है। इसे पचाना आ गया
तो फिर मीठी दवाई पचाना
मुश्किल नहीं लगेगा।

यह तो नई

जहाँ-जहाँ हमारी कसौटी हो, वहाँ
यदि हम ऐसा कहें कि "अरे, यह दुःख
कहाँ से आ गया?" ऐसा कहें तो दुःख बढ़ता है।
और यदि दुःख आने पर हम ऐसा कहें कि
"नहीं, यह अनुकूल है, अच्छा है" तो अनुकूल हो जाता है इसलिए पॉज़िटिव बोलना।

यह स्पीड ब्रेकर है, वह किस लिए हैं? तुम्हारी सेफ्टी के लिए हैं। वैसे ही ये जो अड़चनें आती हैं, वे तुम्हारे हित के लिए हैं।

ये अड़चनें नहीं होती तो सभी स्पीड में रुके बिना दौड़ते रहते और एक्सिडन्ट कर देते। अड़चनें नॉर्मालिटी रखने के लिए हैं।

ही बात!

पहले सहन करने की ताकत आती है, उसके बाद अड़चनें आती हैं, ऐसा नियम है।

नहीं तो मनुष्य वहीं का वहीं खत्म हो जाए।

जैसे कि पहले पैर में ताकत आती है, उसके बाद पहाड़ चढ़ने का संयोग आता है।

यह तो नई

महावीर भगवान अपने कर्म खपाने के लिए सामने से चलकर अनार्य देश में गए थे। (जहाँ उन्हें कोई भगवान की तरह पहचानता नहीं हो। वहाँ उन्हें कोई खाना भी नहीं देते, वस्त्रहीन देखकर उन्हें पत्थर मारते, ऐसा करते थे।) तो क्या हमें जब प्रतिकूलता (मुश्किल संयोग) मिले तो उसका फायदा नहीं उठाना चाहिए?

पत्थर पर कितने हथौड़े पड़ते हैं, तब जाकर उससे मूर्ति बनती है। फिर उसकी जब प्राणप्रतिष्ठा होती है, तब वह भगवान की तरह पूजी जाती है।

घर्षण प्रगति के लिए है। नदी में पत्थर यहाँ वहाँ से घिस-घिसकर गोल होते रहते हैं।

फिर वह गोल पत्थर शालिग्राम की तरह पूजे जाते हैं।

ही बात!

कई लोग कहते हैं कि अभी अड़चन न आए तो अच्छा। तो फिर उसे बाद में आएगी। मरते समय आएगी। मरते समय जब शरीर मज़बूत नहीं होगा, तब आएगी। इसलिए देर से मत बुलाना। अभी शरीर मज़बूत है, ताकत है, तब आ जाए तो अच्छा है। बाद में तो अड़चनें भारी पड़ेंगी।

म्यूज़िक क्लास

खुशी ने अपनी फ्रेन्ड त्रिशा को बहुत खुश देखकर लंबी सांस ली, "त्रिशा को उसकी म्यूज़िक क्लास में कितना मज़ा आता है। मुझे तो मेरी म्यूज़िक क्लास में एक जेल के कैदी जैसा लगता है। किसे मालूम था कि तुलसी टीचर और बेनर्जी टीचर के म्यूज़िक क्लास के बीच जमीन आसमान का फर्क होगा!"

"हाय खुशी!" खुशी को कॉरिडोर में देखकर त्रिशा उसके पास आई। खुशी कुछ जवाब दे उससे पहले ही वह बोलने लगी, "आज म्यूज़िक क्लास में मज़ा आ गया! हम लोगों ने हिट सी.डी. का म्यूज़िक सुना। तुलसी टीचर उसे "म्यूज़िक एप्रीसिएशन" कहती हैं। बहुत मज़ा आया।"

"हममम... तू कितनी लकी है यार! कितनी अच्छी टीचर मिली हैं तुझे। और मुझे? कैसी खड़ूस टीचर मिली हैं। क्या देखकर उन्हें टीचर बनाया होगा। उन्हें तो मिलिट्री में होना चाहिए। कितनी स्ट्रिक्ट हैं। हर वक्त क्लास में म्यूज़िकल नोट्स और स्केल पढ़ाती रहती हैं और कितना होमवर्क देती हैं।"

खुशी को इतनी निराश देखकर त्रिशा बोली, "तू भी मेरी क्लास में होती तो मज़ा आ जाता।"

"हाँ यार। चल, मैं जाती हूँ। कल म्यूज़िक का टेस्ट है। मुझे पढ़ना है," ऐसा कहकर खुशी घर जाने के लिए निकल गई। पूरे रास्ते उसे बेनर्जी टीचर पर बहुत गुस्सा आता रहा।

घर जाकर, थोड़ा नाश्ता करके, वह पढ़ने बैठ गई। लेकिन उसका चित्त पढ़ने में नहीं लग रहा था। तभी दीदी अपनी कॉफी लेकर रूम में पहुँची। बायोलॉजी की बुक लेकर दीदी पलंग पर पढ़ने लगीं।

उनका ध्यान

खुशी की तरफ गया। वह बहुत निराश दिख रही थी।

"खुशी! क्या हुआ तुझे? क्या पढ़ रही है?" दीदी ने खुशी से पूछा।

"पढ़ नहीं रही, पढ़ने की कोशिश कर रही हूँ। कल म्यूज़िक का टेस्ट है। मुझे म्यूज़िक सीखने के लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है और त्रिशा उसकी क्लास में कितने मज़े करती है। बेनर्जी टीचर कितनी स्ट्रिक्ट हैं! और तुलसी टीचर तो कितनी स्वीट हैं।" खुशी ने अपनी नाराजगी दीदी के सामने व्यक्त की।

"ओह तो ऐसी बात है! अभी तुझे यह मेहनत लग रही है खुशी, लेकिन एक दिन तू बेनर्जी टीचर का आभार मानेगी कि तू ये सब पढ़ सकी" खुशी को दिलासा देते हुए दीदी ने कहा।

"हं...." खुशी ने कटाक्ष में सिर हिलाया।

"मैं तुझे एक तितली की कहानी सुनाती हूँ। एक दिन एक छोटी सी तितली उसके ककून से बाहर निकलने के लिए बहुत कोशिश कर रही थी। एक बालक उसके इस परिश्रम को देख रहा था। ककून के छोटे से छेद में से बाहर निकलने के लिए बहुत मेहनत करने के बाद वह थोड़ी देर रुकी। यह देखकर उस बालक को उस पर दया आई। उसने तितली की मदद करने के हेतु से ककून को कैंची से काट दिया। तितली बाहर निकली। बालक राह देखने लगा कि अभी वह उड़ेगी, लेकिन वह उड़ न सकी। क्योंकि उसके पंख सिकुड़ गए थे।"

थोड़ी देर रुककर दीदी फिर आगे बोलीं, "जानती हो क्यों? क्योंकि ककून के छोटे छेद में से निकलने की तितली की जो मेहनत थी, वह ज़रूरी थी। वैज्ञानिक ढंग से देखें तो, ककून के छेद में से निकलने की मेहनत के समय उसके शरीर का पानी उसके पंख में जाता है, जिससे उसके पंखों को उड़ने की शक्ति मिलती है।

अब यह मेहनत न करने के कारण उस तितली के पंखों को उड़ने की शक्ति ही नहीं मिली और वह उड़ न सकी। कई बार हमें अपनी लाइफ में बहुत मेहनत करनी पड़ती है। लेकिन यदि हम उस मेहनत को पॉज़िटिवली देखें, तो उसमें से हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। यह स्ट्रगल हमें शक्ति और अनुभव देकर जाता है। अभी तुझे लगता होगा कि तुझे त्रिशा से बहुत ज्यादा मेहनत करनी पड़ रही है। लेकिन इस मेहनत से भविष्य में तुझे ज़रूर मदद मिलेगी।"

दीदी की बात से खुशी को समाधान मिला। उस दिन से वह दिल से पढ़ने लगी। और पूरा साल सिन्सयरली पढ़ाई की।

ऐसा करते करते साल पूरा हो गया। वेकेशन में त्रिशा और खुशी एक समरकेम्प में शामिल हुए।

केम्प में शाम को घूमते-घूमते वे दोनों रिक्रिएशन रूम के पास आए। वहाँ एक पियानो था। त्रिशा पियानो के पास गई, "अरे वाह, यहाँ तो सोंगबुक भी है! लेकिन यह सब तो मेरे लिए चाइनीज़ है!" सोंगबुक के पेज पलटते हुए त्रिशा बोली। पियानो पर ऐसे वैसे उँगली घुमाकर वह उठ गई।

"चल हम लोग टेनिस कोर्ट में..." त्रिशा उसका वाक्य पूरा करे, उससे पहले ही उसे पियानो का मधुर स्वर सुनाई दिया। पीछे घूमकर देखा तो खुशी सोंगबुक में से देखकर पियानो बजा रही थी।

"वाह खुशी! तुझे कैसे आया?" त्रिशा ने आश्चर्य से पूछा।

"म्यूज़िक क्लास का कमाल और पूरे साल मेहनत करने का रिज़ल्ट। तुम लोग भी क्लास में सीखे होंगे न?" खुशी ने उत्सुकता से पूछा।

"हम लोग तो म्यूज़िक क्लास में कुछ सीखे ही नहीं, पूरे साल बस मस्ती ही की है," धीरे से त्रिशा बोली।

तभी दूसरे बच्चे भी खुशी के पियानो की मधुर आवाज़ सुनकर वहाँ इकट्ठे हो गए। सभी ने खुशी को पियानो बजाने के लिए कहा। मन ही मन में खुशी ने बेनर्जी टीचर का आभार माना और सोंगबुक में देखकर, अपना मनपसंद गीत बजाने लगी।
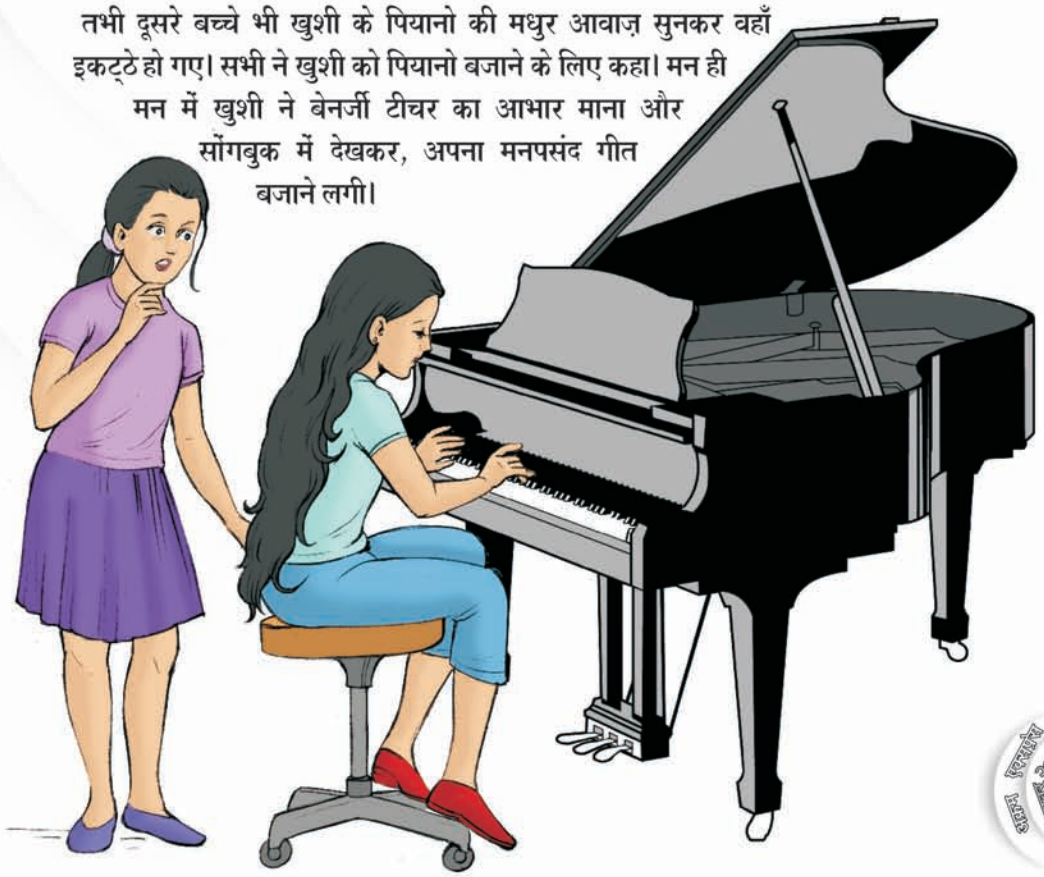
महर्षि अरविंद घोष (अरबिंदो) के बचपन की बात है।

महर्षि अरविंद घोष अपने देश के जाने माने स्वतंत्रता सेनानी तथा माने हुए तत्वचिंतक थे। वे बड़ौदा में इ.स. १८९४ से १९०६ के दौरान महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ के निजी सचिव थे। तो चलो, हम भी श्री अरविंद के बचपन की थोड़ी बातें जानें।

श्री अरविंद बचपन से ही बहुत तेजस्वी थे। उनके पिता जी ने अरविंद और उनके दूसरो दो भाईयों को मेन्चेस्टर में उनके मित्र ड्यूएट के यहाँ पढ़ने भेजा।

थोड़े समय तक अरविंद और उनके भाईयों ने मिस्टर ड्यूएट से शिक्षा ली। लेकिन संयोगानुसार थोड़े समय के बाद ड्यूएट और उनकी पत्नी को ऑस्ट्रेलिया जाना पड़ा। इसलिए उन्होंने लंदन में एक घर किराए पर लिया और उसमें अपनी वृद्ध माता के साथ इन तीनों भाईयों की रहने की व्यवस्था की।

तीनों भाई लंदन में दादी माँ के साथ रहते थे। उनके पिता जी घर से नियमित पैसे नहीं भेज सकते थे। कई बार तो महीने बीत जाते थे तो भी पैसा नहीं आता था। लेकिन दादी माँ थीं इसलिए खाने-पीने की कोई तकलीफ नहीं थी। इस तरह तीन साल तो अच्छी तरह निकल गए।

लेकिन एक दिन ऐसी गड़बड़ हुई कि सबकुछ उल्टा-सीधा हो गया। उसमें हुआ ऐसा कि दादी माँ को तीनों भाईयों को हर रोज़ प्रार्थना गाकर सुनानी पड़ती थी। साथ ही प्रार्थना के बाद धर्मग्रंथ में से एक पेज ज़ोर-ज़ोर से पढ़कर सुनाना पड़ता था। यह पढ़ने का काम अधिकतर भाई विनयभूषण ही करते थे। लेकिन एक दिन बीचवाले भाई मनमोहन ने पढ़ा। उस दिन मनमोहन का मिजाज़ ठिकाने पर नहीं था। धर्मग्रंथ पढ़ने से पहले वे ज़ोर से बोले, "धर्मग्रंथ में जो लिखा है, उस तरह लोग चलते तो हैं नहीं, उसे बस पढ़ते ही रहते हैं।"

उस कमरे में रहकर उन्होंने इटालियन, रशियन, स्पेनिश, जर्मन और ग्रीक भाषाएँ भी सीखीं।

यह सुनकर दादी माँ क्रोधित हो गई। उनका गुस्सा भड़क उठा और बोली, "अरेरे, तुम तो घोर नास्तिक हो! धर्मग्रंथ का ऐसा अपमान कर रहे हो? जाओ, अब मुझे तुम्हारे साथ नहीं रहना है। मैं ये चली।" और वह सचमुच अपना सब सामान लेकर दूसरी जगह रहने चली गई।

और उस दिन से घर चलाने का पूरा खर्च तीनों भाईयों के सिर पर आ पड़ा। अब घर का किराया कौन भरेगा? फीस भरने के भी पैसे नहीं थे, तो खाने-पीने के लिए पैसे कहाँ से निकालेंगे? ऐसी अनेक मुश्किलों ने उन्हें घेर लिया। किराया भरने का पैसा नहीं होने के कारण घर खाली करना पड़ा।

बड़े भाई विनयभूषण ने लिबरल क्लब के ऑफिस में हफ्ते के पाँच पाउन्ड की नौकरी खोज ली। क्लब के पीछे एक तहखाने जैसा कमरा था, वह उन्हें रहने के लिए दिया। वास्तव में तो वह ऑफिस का गोडाउन था। हवा और रोशनी का तो नाम तक नहीं। लंदन की कातिल सर्दी में गर्मी दे ऐसा "फायर प्लेस" की भी कोई व्यवस्था नहीं थी, क्योंकि यह कमरा सामान रखने के लिए था। इन्सानों के रहने के लिए नहीं। इसके अलावा, वहाँ ट्रेनों के लगातार आने-जाने का शोर चलता ही रहता था।

लेकिन श्री अरविंद हिम्मत नहीं हारे। ऐसे तहखाने में, इस तरह के सतत शोर के बीच रहकर उन्होंने अपने स्कूल की पढ़ाई पूरी की। इसके अलावा उस कमरे में रहकर उन्होंने इटालियन, रशियन, स्पेनिश, जर्मन और ग्रीक भाषाएँ भी सीखीं। इतना ही नहीं, लेकिन उन्हें समग्र स्कूल में श्रेष्ठ साहित्य लिखने के लिए दिए जानेवाला "बटरवर्थ प्राइज़" और इतिहास के लिए दिया जाता "वुडवर्थ प्राइज़" भी मिला। और स्कूल के श्रेष्ठ विद्यार्थी की स्कॉलर्शिप भी मिली।

देखा मित्रो, श्री अरविंद ऐसे प्रतिकूल संयोगों में भी कितनी उच्च पढ़ाई कर सके! तो चलो, आज हम भी तय करें, कि छोटी-बड़ी मुश्किलों से निराश हुए बिना पॉज़िटिव रहकर पार निकल जाएँगे।

अपने आप को परखकर देखो...

इस अंक में हमें प्रतिकूलता को उपकारी देखने की दृष्टि मिली। तो चलो, हम उस दृष्टि से अपने मित्र आगम की मदद करें। नीचे दिए गए प्रतिकूल संयोगों में आगम को कैसी दृष्टि रखनी चाहिए? हर एक प्रतिकूल संयोग के लिए दी गई चाबियों में से अनुरूप चाबी पसंद करें और प्रतिकूल संयोग के सामने दी गई जगह में चाबी नं. लिखें।

घटनाएँ

१. फाइनल इग्ज़ाम के प्रोजेक्ट में सभी को आसान टॉपिक मिले, और आगम को कठिन टॉपिक मिला। टॉपिक देखकर आगम को लगा कि "इतना कठिन टॉपिक मुझे नहीं आएगा। अब मैं क्या करूँ?" चाबी नं -

२. यात्रा में गए तब, आगम के अलावा उसके सभी मित्रों के होटल-रूम में टी.वी., माइक्रो-वेव और फ्रीज़ था और आगम के रूम में ऐसी कोई फेसिलिटी नहीं थी। आगम को हुआ, "ये क्या? मेरे साथ ही ऐसा अन्याय क्यों?"

३. जब मम्मी दीदी को कोई भी काम करने को कहे, तब वह काम दीदी आगम के पास अटा-पटाकर और आखिर में डाँटकर भी करवा लेती थी। दीदी के ऐसे बरताव से आगम परेशान हो गया था। चाबी नं.

४. आगम के सभी फ्रेन्ड्स स्कूटर लेकर स्कूल जाते और आगम रोज़ साइकल पर जाता। उसे कई बार मन में लगता कि "साइकलिंग करना कितना कठिन है। काश, मेरे पास भी स्कूटर होता।" चाबी नं.

५. यदि कभी मम्मी को रसोई बनाने में देर हो जाती तो आगम को खाना लेट मिलता और तभी यदि मम्मी ने करेले की सब्ज़ी बनाई हो, तो आगम का गुस्सा आसमान पर चढ़ जाता था। चाबी नं.

चाबियाँ

ए. मम्मी को डिस्टर्ब किए बिना, इन्टरनेट पर से पीज़ा होम-डिलिवरी का नंबर ढूँढकर पीज़ा मंगवा लेना।

बी. महावीर भगवान अपने कर्म खपाने के लिए सामने से चलकर अनार्य देश में गए। हमें तो घर बैठकर उपकारी मिलें, तो उसका फायदा नहीं उठाना चाहिए?

सी. हम दुःखी हो गए और वहाँ पर आप कहे कि, "नहीं, यहाँ अनुकूल है, अच्छा है" तो अनुकूल लगेगा।

डी. गोलमटोल फ्रेन्ड को साइकलिंग की एक्ससाइज़ के फायदे समझाकर, उसे साइकल देकर उसका स्कूटर इस्तेमाल करना।

ई. जिसके रूम में सभी फेसिलिटी हो, उस रूम में सिफ्ट हो जाना।

एफ. जो थाली में आए वह खा लेना, लेट मिला तो क्या, मिला तो सही। कई लोगों को तो खाना भी नहीं मिलता। और वैसे भी कड़वा रस शरीर के लिए हितकारी है।

जी. "मुझे आएगा ही", ऐसा सोचकर काम शुरू कर देना और ध्यान में रखना कि कठिन काम करने से अच्छा अनुभव मिलता है और वीज़न खिलता है।

एच. अभी शरीर स्वस्थ है, ताकत है तो अभी अड़चनें आ जाए तो अच्छा है। बाद में भारी पड़ेगा।

जवाब : १-जी, २-ई, ३-सी, ४-डी, एच, ५-एफ

इतिहास में बहुत से उदाहरण हैं कि बड़े-बड़े सफल व्यक्तियों को सफलता मिलने से पहले बहुत से विघ्न और अड़चनों का सामना करना पड़ा था। उन्हें सफलता और जीत मिली क्योंकि वे इन अड़चनों से हताश या उदास नहीं हुए।

चलो, हम ऐसे ही कुछ सफल व्यक्तियों के जीवन सफर के बारे में थोड़ा जानें।

१. १९४० में चेस्टर कार्लसन नाम के एक युवा साइन्टिस्ट ने एक बहुत ही पावरफुल खोज की। अपनी खोज को कार्यक्षेत्र में लाने के लिए वे करीब २० कार्परेशन (कंपनी) के पास गए। लेकिन सभी ने उनकी खोज को रद्द कर दिया। करीब सात साल के प्रयास के बाद, १९४७ में एक छोटी सी कंपनी ने उनकी खोज स्वीकार की। उस कंपनी का नाम था-हेलोइड, जो आज ज़ेरोक्स कार्परेशन के नाम से पहचानी जाती है। और कार्लसेन की खोज थी - इलेक्ट्रोस्टेटिक पेपर कोपीइंग, जिसे आज हम ज़ेरोक्स के नाम से पहचानते हैं।

जीवंत

२. यू.एस.ए. के सोलहवें राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने अपनी ज़िंदगी में बहुत सी असफलताओं और हार का सामना किया था। फिर भी उन्होंने कभी हार नहीं मानीं।

एक गरीब परिवार में जन्मे लिंकन, राष्ट्रपति बनने से पहले आठ बार चुनाव हार चुके थे। दो बार उन्हें अपने व्यापार में भारी नुकसान का सामना करना पड़ा था। लेकिन फिर भी, उन्होंने अपना लक्ष्य कभी भी नहीं छोड़ा। और आज लिंकन का स्थान यू.एस.ए. के सबसे महान राष्ट्रपतियों में है।

३. १९५२ में एडमंड हिलेरी ने पहली बार माउन्ट एवरेस्ट चढ़ने का प्रयास किया। उनका यह प्रयास निष्फल हुआ। उसके बाद, इंग्लेंड में एक ग्रुप को संबोधित करने के लिए उन्हें निमंत्रण दिया गया।

हिलेरी स्टेज पर आए। वहाँ माउन्ट एवरेस्ट के फोटो पर हाथ रखकर, माउन्ट एवरेस्ट को संबोधित करते हुए बोले, "एवरेस्ट, पहली बार तुमने मुझे हराया, अब मैं तुम्हें हराऊँगा। क्योंकि तुम्हें जितना बढ़ना था, उतने तुम बढ़ चुके हो, लेकिन मेरा विकास तो अभी हो रहा है।"

और उसके बाद, एक साल के बाद मई २९, १९५३ में एडमंड हिलेरी दुनिया के पहले व्यक्ति थे, जो माउन्ट एवरेस्ट चढ़ने में सफल हुए।

उदाहरण

४. सरदार

वल्लभभाई पटेल का बचपन बहुत ही गरीबी में बीता था। थोड़े समय ननिहाल नडियाद में पढ़े। बीच-बीच में करमसद जाना होता तब वहाँ एक छोटा सा घर किराए पर लेकर करीब सात विद्यार्थी क्लब जैसा बनाकर रहते थे। प्रत्येक जन अपने घर से एक हफ्ते का अनाज रविवार को ले आते और बारी-बारी से सब अपने हाथ से ही खाना बनाकर खाते थे।

बैरिस्टर बनने के लिए इंग्लेंड गए तब भी उनके पास किताबें खरीदने के पैसे भी नहीं थे। इसलिए लाइब्रेरी में जाकर पढ़ते थे। वह जहाँ रहते थे, वहाँ से लाइब्रेरी ग्यारह-बारह मील दूर थी। रोज़ इतना चलकर सुबह नौ बजे वहाँ पहुँचते और शाम को छः बजे जब लाइब्रेरी बंद हो जाती, सभी चले जाते तब चपरासी आकर कहता कि "साहब, अब सब चले गए" तब सरदार वहाँ से उठते। शाम को वापस चलकर ही घर जाते। इस तरह रोज़ बाईस-चौबीस मील चलना पड़ता था। ऐसी कठिन ज़िंदगी से उनकी कद-काठी तैयार हुई और एक मज़बूत व्यक्तित्व खिला।

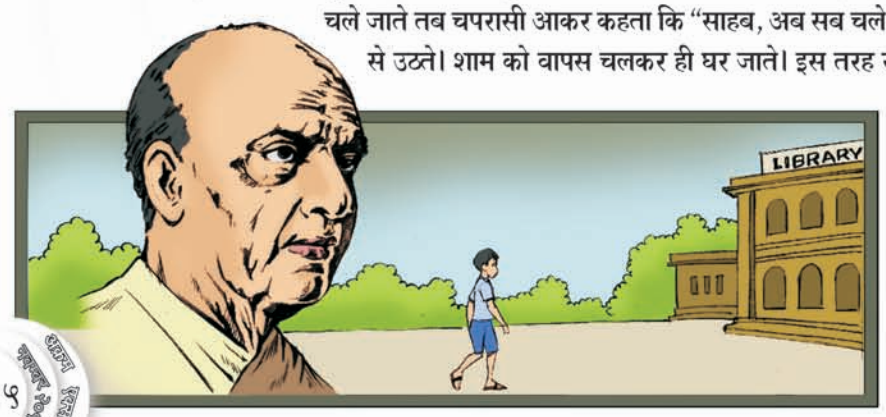

चलो खेलें

१

यहाँ दिए गए ८ टुकड़ों को इस तरह सेट करें ताकि ८/८ का चेस बोर्ड बनें।

२

दो समान चित्रों को ढूँढो।

३

यहाँ प्रश्न चिन्ह की जगह पर नीचे दिए गए चार चित्रों में से कोई एक चित्र पसंद करके खाली जगह भरें।

A

B

C

D

४

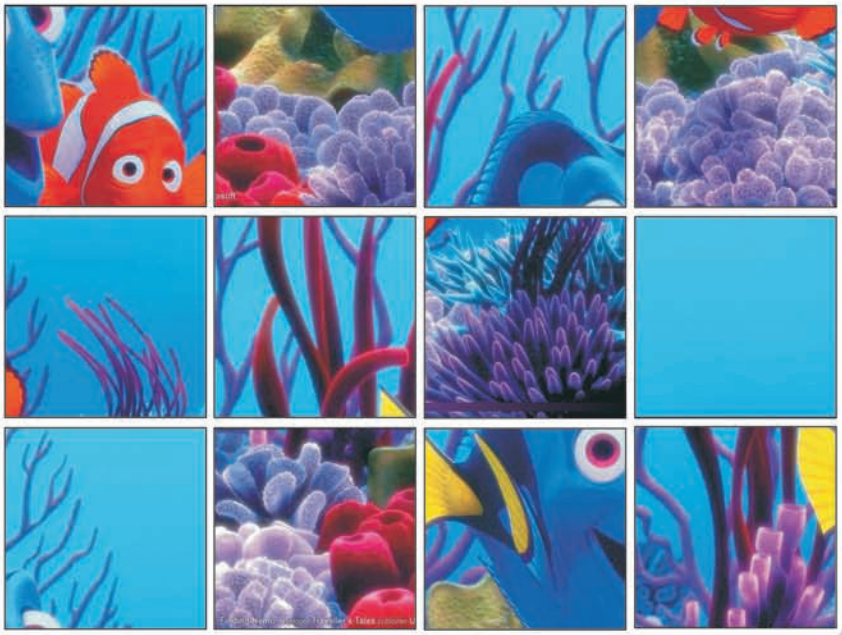

दिए गए १२ टुकडों को इस तरह सेट करें ताकि एक चित्र बनें।

५

इस चित्र को ध्यान से देखें और क्या लिखा है वह ढूँढें।

६

रास्ता ढूँढें।

मीठी यादें

एक बार अहमदाबाद में पूज्य नीरू माँ का सत्संग था। सत्संग का समय होते ही गाड़ी तैयार हो गई। नीरू माँ गाड़ी में आगे बैठीं। एक भाई गाड़ी चला रहे थे, वे मूलतः मुंबई के थे। और दूसरे दो-तीन भाई पीछे की सीट पर बैठे थे।

सत्संग हॉल के नज़दीक पहुँचते ही सभी महात्मा दिखने लगे। नीरू माँ को देखकर सभी महात्मा झुक-झुककर उन्हें और ड्राइविंग करनेवाले भाई को "जय सच्चिदानंद" कहने लगे। नीरू माँ के साथ भाई को भी सभी "जय सच्चिदानंद" कह रहे थे। भाई मौन रहकर "जय सच्चिदानंद" कर रहे थे। इस तरह थोड़े महात्माओं के साथ ऐसा हुआ।

गाड़ी आगे बढ़ रही थी। तभी आगे जाते हुए उन्हें मुंबई के थोड़े महात्मा दिखे। उन्होंने नीरू माँ को "जय सच्चिदानंद" किया। उन्हें देखकर वह भाई एकदम उल्लास में आ गए। सामने से "जय सच्चिदानंद" करके, गाड़ी उनके पास ले जाकर धीमी करके बोले, "ओहोहो! कैसे हो महात्मा? कब आए?"

बात कर रहे थे, इतने में दूसरे मुंबई के महात्मा को देखा। उनके साथ भी उन्होंने इतने ही प्रेम से और आनंद से बात की।

यह सब नीरू माँ देख रही थीं। तब तो वे मौन रहीं, लेकिन बाद में जब सत्संग हॉल के पास पहुँचे, तब नीरू माँ ने भाई को टोकते हुए कहा, "अरे, तुम लोगों के साथ कितना भेद रखते हो कि ये मुंबईवाले और ये सूरतवाले। मुंबईवाले अपने और सूरतवाले पराए। ये सब दादा के महात्मा हैं। तुम्हें निष्पक्षपाती रहना चाहिए और अंत में तो हमें अभेद रहना है। ऐसा करोगे तो निष्पक्षपाती कभी नहीं हो सकोगे। हमें तो ठेठ वीतरागता तक पहुँचना है।"

भाई को नीरू माँ की बात बहुत स्पर्श कर गई। उसके बाद उन्हें हमेशा यह याद रहता कि दादा के ये सब महात्मा एक समान ही हैं।

ज्ञानियों की एक ठकोर - भी ज्ञान की कितनी श्रेणियाँ चढ़ा देती हैं!!

पज़ल के जवाब

४

१

२

२-५

३

A-   B-

C-   D-

६

Bigfun

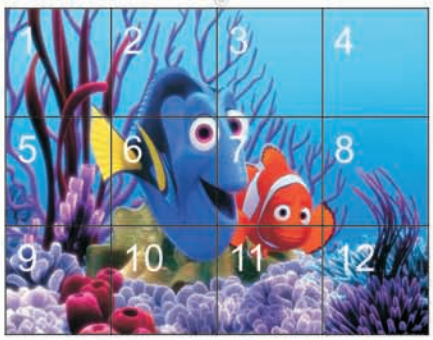

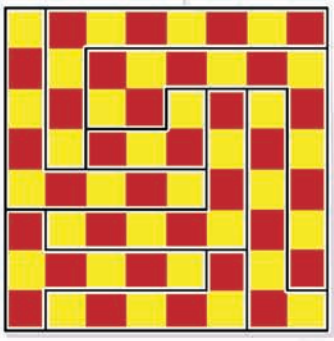

ओस्ट्रेलिया-न्यूज़िलेन्ड में बाच्चों के साथ पूज्यश्री

कल्चरल प्रोग्राम

आशीर्वाद

आरती

इन्फोर्मल टाइम

Akram Express

November 2013
Year : 1, Issue : 8
Conti. Issue No.:8

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
Posted at Adalaj Post office
on 8th of every month

न्यूज़िलेन्ड आगमन

कल्चरल प्रोग्राम

आशीर्वाद

गरबा

फन ज़ोन

अक्रम एक्सप्रेस के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

Printer, Publisher and Owner - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Dimple Mehta,
Printing Press Amba offset:- Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published
at Mahavideh Foundation, Simandhar City, Adalaj-382421.Dist-Gandhinagar.